हिंदी स्नातक - II (प्रतिष्ठा)
पत्र - III
विषय - 'राम की शक्तिपूजा' का काव्यशिल्प
दिनांक - 20.04.2020
व्याख्यान सं- 1

द्वारा :-
डॉ० सुजाता गुप्ता
(अतिथि शिक्षक)
हिंदी विभाग
जे०एन०कॉलेज
मधुबनी

'राम की शक्तिपूजा' का काव्यशिल्प

'एकोहं बहुस्याम', अर्थात् मैं एक हूँ और बहुत बनना चाहता हूँ, दर्शन का यह प्रतिबिम्बन एक ऐसे रचनाकार के लिए रूढ हो गया है, जिसके व्यक्तित्व की अक्खड़ता, विद्रोहभाव, चिन्तन की निर्भीकता, अपराजेय पौरुष, काव्य की उदात्तता एवं भाषा की ढिठई जगजाहिर थी। उनके व्यक्तित्व का यह 'निरालापन' ही उन्हें हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक अनन्य स्थान पर सिद्ध करता है। इस अद्वितीय रचनाकार का नाम है 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला''। छायावाद का पुरुषार्थ इस रचनाकार की कठिन साधना का प्रतीक है और यह साधना एक व्यक्ति के 'मतवालेपन' का द्योतक बन समस्त हिंदी समुदाय को अपने रंग में सराबोर कर रही है। एक चित्रकार की कुशल चित्रकारी ही सभी रंगों को बहुविध सुंदरता प्रदान करती है। जिसका एक उत्कृष्टतम् उदाहरण है 'राम की शक्तिपूजा'।

काव्यसौष्ठव की दृष्टि से यह कविता लघु महाकाव्य की श्रेणी की कविता कही जा सकती है, जिसमें मुक्त छंद का बेहद मनोरंजक प्रयोग हुआ है। छन्दों की दृष्टि से निराला हिंदी के क्रांतिकारी कवि हैं और उनके विविध प्रयोगों की परिणति मुक्त छंद में हमारे सामने आयी है। पुष्पदंत ने मुक्त छंद का सबसे प्रथम प्रयोग किया था। आज आधुनिक युग में निराला ने इसका प्रयोग अपनी कविताओं

Scanned with CamScanner

में किया है। 'राम की शक्तिपूजा' में निराला ने स्वतंत्र छंद का प्रयोग नहीं किया है। यहाँ मिश्रित छंदों का प्रयोग हुआ है। यह कविता 24 मात्राओं के छंद से बनी है, जिसमें 16 मात्राओं का अलग छंद है, जिसे पद्धरि कहते हैं। इनकी लय अलग है और दूसरा पद -पाद- पुलक छंद है, जो 8 मात्राओं से मिलकर बना हुआ है, जैसे कि शक्तिपूजा छंद, मात्रिक सममात्रिक छंद है।

दूसरी इनकी काव्यकला को लेकर महत्वपूर्ण बात यह है कि यह एक 'कालजयी रचना' (classic) है, जिसने भिन्न जीवन पद्धतियों, दृष्टिकोणों, आकांक्षाओं, रुचियों, पीढ़ियों भाषाओं से जुड़े लोगों की पारस्परिक भिन्नता के बावजूद किसी रचना की श्रेष्ठता के संबंध में प्रायः लोगों को एकमत किया है और यही इसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसने बदलते हुए संदर्भों के साथ अपनी नयी पहचान बनायी है।

इस कविता की तीसरी विशेषता इसकी नाटकीयता है। यह संपूर्ण संरचना नाटकीय रूप लेती है, जो अघोषित रूप से नाटक के अनेक तत्व अपने अंदर समाहित किए हुए है। इसमें दृश्य की चित्रण की क्षमता बहुत अधिक बिम्बात्मक है। यहाँ कविता का प्रत्यक्षीकरण होता है। अर्थात पढ़ते हुए देखने का सुख मिलता है। यहाँ सारे शब्द प्रत्यक्ष हो जाते हैं, जिनकी डोर पकड़कर हम उस मूर्ति को (राम की) साक्षात् देख रहे हैं। राम चित्रात्मक रूप में हमारे सामने आते हैं:

सिहरा तन, क्षण भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता-ध्यान-लीन राम के अधर,
फिर विश्व-विजय-भावना हृदय में आयी भर,

Scanned with CamScanner